

यत्र या हे म जो न न म स्का स ध के ग थो ठ म् क्षा न सा वा म न
क्षय का जो वि स्का क म् श्री ना ता य न य म् या य तो क म् थ म
सा न स द स्का क ता य थ म् म उ सा तै ग ध न् य ग दा व क् ध
न स या जो वि स्का क थ थो ठ म् श्री ते पू जो न न म स्का स ध के
ध न न पु न् जो सु द य क स ॥ २ ॥ ग म् थ य् वा व ॥ त्व म व मा
ता व यि ता त्व म व त्व म व व न् य न या त्व म व ॥ त्व म

आम मरुकाधि

ASFA ARCHIVES

2055

I

वविश्यादविनेत्रमव त्रमव सर्वममदवदवा ॥ रुदव
दव निश य २ नेमा मेव वृत्तु स या स विद्या धनै थरा धि धिं स
मर्क वृत्तु स या स धर्क ग म नाना नाना कृष्ण या क वि न ति या क
॥ १५ ॥ रु र्था धन र वा वा जा न मि धर्म न च म्य स र हि जा १५
ना मि या र्य न च म्य नि वृ ह्नि क ना वि द व न रु दि सि त न य
ध नि र्क क सि त धा क ना मि ॥ ॥ धर्म या झां जी न म सी

या या य या झां जी न म सी या जि रु द व स वा रु द व य रु द व स
म जी न म सी या ध रु द व न या त का रु जि जी न या दा ॥ १६ ॥ रु
नु म्भ रु न दा स न ज रु त य र्था रु म्भ रु न रु रु वा ज रु
म म दा वा न दा य त ॥ ॥ रु य र्था रु म्भ रु न रु धा क रु न धा
दा रु नि धा या रा ध धै रु स या रु रु धा क रु जि रु न रु रु
य रु नि रु स या रु रु न या त का रु जि जी न या दा ॥ १७ ॥ रु

यदय उवाच ॥ यद्गुणानन्दं विन्दमाधवानन्दकं गवशं विष्ट
स्तु नो ह्यसी कंग वा सुद व नमा सुत ॥ ॥ हयद्गु सुद आनन्द
विन्दमाधवानन्दकं गवद्विष्टस्तु नो ह्यसी
कंग वद्विष्टस्तु नो ह्यसी कंग वद्विष्टस्तु नो ह्यसी
दत्ता जाना श्री सुया क सुति या क ॥ ३१ ॥ जयदर्थ उवाच ॥ नम
स्तु यद्गु ह्यसी वस्तु न नमस्तु ह्यसी ॥ ॥ जयदर्थ उवाच ॥ नम

स्तु मदी गत न गती ॥ ॥ यद्गु मन्त्र्या श्री सुया ते नमस्तु
या तद्गु श्री सुया कंग व नमा सुत ॥ ॥ हयद्गु सुद आनन्द
विन्दमाधवानन्दकं गवद्विष्टस्तु नो ह्यसी
कंग वद्विष्टस्तु नो ह्यसी कंग वद्विष्टस्तु नो ह्यसी
दत्ता जाना श्री सुया क सुति या क ॥ ३२ ॥ विकर्ण उवाच ॥ क
यवा सुद वा यदवका नन्दना यवानन्दय यद्गु मासाय ॥
विन्दय नमा नम ॥ ॥ श्री सुया ते वा सुद व या ते दवकी या
ते आनन्द या क सुया ते नन्द ॥ ॥ यद्गु मासाय ॥ ॥

या ते जी न वा जै वा ल न म स्का स ध के वि क नू न मु ति या क ॥ ३३ ॥
साम ड ध र वा च ॥ न मा य त म क स्का री न म स्का वि च श व न । वा
सू द वा य म का य य टि ना य ट य न म ॥ ॥ ह य त म क स्का न द
सै सा त त का या क म या ते चू न या ल या ते जी न न म स्का स रू नै ॥
वा सू द व या ते म क म ह्नि म या ते उ ठि य नी स ना थ या ते न
म स्का स ध के साम ड ध न मु ति या क ॥ ३४ ॥ वे ना ती त्र वा च ॥ न

मा व अ ख द वा य र म वा क व हि ता य च । उ ग दा ता य क म्मा य
र म वि च य न मा न म ॥ ॥ व म श्व तू य म द व या ते सा वा य म
या ते ग्रा व म्मा या ते जी न वा जै वा ल न म स्का स ध के वे ना ती न म
ति या क ॥ ३५ ॥ न म्मा र वा च ॥ न म्मा य म्मा र्मा क म्मा या त वा सै
दा य ते । न म्मा र्मा क र म वि च न त वा वि च त र यी ॥ ॥ ति सा
व्या धि य सै ती त या व लू स दां या ता म्मा न ध ज ति य व ल सै ज

[illegible][illegible]

शानमुक् दनत्रसिंदुजनादन धर्कं द्वि धं २ थरु सिनामकायरा
थत जिनामसायननिश्रयने थफ मनुष्यन वेक च वासया
गजानदयुज धर्कं श्रीकृष्णया थम वर रुदन आसूद य कर
॥ ३४ ॥ कर्षू कर्षू तिरुषू जा मां वद ति निरु स ॥ ज स लि चो ज थ
यं फं न न का इ द्वा मा द्वा ॥ ॥ पुन वी त्रि श्रीकृष्ण न आसूद य
कर ल म नू य सो क य फ म नू य न श्रीकृष्ण २ धर्कं जिनामका

युजा वा फ म नू य या त जी न ज न मां नै रा म वा द य स स न थ
या ग द या थं न न क न उ द्वा त या य धर्कं श्रीकृष्ण न आसूद य
कर ॥ ३५ ॥ श्री म दा द व उ वा द्वा ॥ स क नो ना य ल लु स काम या
क य म तै त ता ग म दा स र्व वा र्थ य स ता रु व ति निरु स ॥
॥ ॥ उ या क र्म न त द्वि या दा दै न्य र्ग मा आ दी न द का यो थ
स स न या दा र्थ न्य थ त र्थ न्य क र व ना ता य न २ धर्कं थ त

ना ना य न या ना म का र ना स थ त यू न्य द रा ध के श्री म हा द व
न श्री कृष्ण या आ स आ स द य क र ॥ ५० ॥ श्री पा र्व त्वा वा त ये व
गं ग म ना च त य य दा व नी त य म त च ती च । म क्वी वि जी थ
नि व स ती च त य ज या च ता य त क थ य र्ग र्ग ॥ ॥ य य सि थ २०
म श्री ना ना य न या क थ ढ ढ रा वा ना रा रा य सि थ स र्ग
म श्री दी न द का पी थ न चा नी रा ध थी ढ क क श्री ना

य न ध के श्री पा र्व ती न श्री कृष्ण या आ स आ स द य क र ॥ ५१ ॥ न न
उ क वा न न क य य मा न उ य म न य त रा धि ती । किं तु या ना
चि ता द व क ग व न ग ना ग क ॥ ॥ द ना ना ये न नी न न न क स
वा ढ म नृ षा या त थ या रु म नृ षा कृ य च य नी म न श्री
ना ना य न या म लि द य क र य ना म या ना ना ना ये न या ना
म म नृ का य च य नी म ३ ४ ख मा च न रु या रा ध के न न ना

जा न श्राद्धं यथा आसन्नं सुदयं कुरु ॥ ४१ ॥ नात्र दूरं वा वा ॥ उन्मत्तं न
सहसं मृतं यथा न समाधित्वा न नां श्रीत्रयं यानां द्रष्टुं लक्ष्मिपदा
यता ॥ ॥ दासं हि याजमनुयाजं नमो काया दासं हि जन्मैर्सेतयः
स्यान्मनसा दानेन सत्त्वं वाचना सत्त्वं यासां धनं सत्त्वं नीनां ॥ २१ ॥
नायनं यायजमलक्ष्मिं याजं धर्मे नात्र दमनाय नमो सुदय
कुरु ॥ ४२ ॥ यद्वा दूरं वा वा ॥ नाथ जातिं सहसं मृतं यथा सुदयं